Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय संस्कृति में पशुओं का अध्ययन : अश्व के विशेष संदर्भ में

शिवलाल*

* एम ए, नेट (इतिहास) गांव लालपुरा पोस्ट,तह-चितलवाना जालौर (राज.) भारत

प्रस्तावना – भारतीय संस्कृति में पशुओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रागेतिहासिक काल में मनुष्य पशुओं का शिकार करके भोजन प्राप्त करता था। मध्यपाषाण काल में मनुष्य ने पशुपालन शुरू कर दिया था जिसके प्रमाण हमें बागोर और आदमगढ़ से प्राप्त हुए है। नवपाषाण काल से मनुष्य ने स्थायी निवास बनाना शुरू किया। मनुष्य अब पशुओ का पालन कृषि में किया जाने लगा भारत में सर्वप्रथम भीमबेटका से पशुओं के शिकार के चित्रों के साक्ष्य मिले है। हिन्दूओ की पौराणिक कथाओ में अनेक पशुओं को देवताओं के वाहन के रूप मिलता है।

भारतीय उपमहाद्वीप में घोड़े के सर्वप्रथम प्रमाण स्वात संस्कृति में मिलते है। तदुपरांत उत्तर हड़पा काल से घोड़े के अवशेष मिले है। मसलन घोड़े से तीन मिट्टी की मुर्तिया मिली है। इसके अलावा सुरकोटदा और बलूचिस्तान से भी घोड़े के प्रमाण मिले।

प्राचीनकाल में यौद्धा अच्छी नस्ल के घोड़ो का युद्ध में प्रयोग करते थे भारतीय साहित्य में घोड़ो की जानकारी वैदिक काल से मिलती है। वैदिक काल में घोड़े का प्रयोग न केवल मनुष्य करता है अपितु देवताओं के पूजन में भी उपयोग किया जाता है। घोड़े के अवशेष ऋग्वेद, यजुर्वेद में मिलते है। घोडा आर्यो का प्रिय पशु था। घोड़ो की सहायता से आर्यो ने विजय प्राप्त की थी। ऋग्वेद में घोड़ो के लिए अनेक प्राथनाएं है। घोड़ो को लड़ाई में रथ खींचने में काम में लिया जाता है। सूर्य को अश्व के रूप में कल्पित किया गया है।

उत्तर वैदिक काल से भारतीय समाज में घोड़ो का महत्व बढ़ गया। सभी जन अधिक से अधिक भूमि प्राप्त करने के लिए युद्ध करने लगे जिससे घोड़ो से खींचने वाले रथो का प्रयोग किया जाने लगा। बढ़ते नगरीकरण और अर्थव्यवस्था में घोड़ो का यातायात के साधन के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। कालांतर में अनेक यज्ञ भी घोड़े से संबंधित होने लगे जिसमें अश्वमेघ यज्ञ और वाजपेय यज्ञ था। वाजपेय यज्ञ में शक्ति प्रदशन किया जाता है जिसमे सोमपान करके राजाओ के बीच रथदौड़ का आयोजन किया जाता है। इसका उल्लेख यजुर्वेद और शतपत ब्राह्मण में मिलता है। अश्वमेघ यज्ञ करने का अधिकारी चक्रवती नरेश ही होते थे। आश्वलायन श्रौत सूत्र का कथन है कि जो सब पदार्थ को प्राप्त करना चाहता है, सब विजयो का इच्छुक होता है और समस्त समृद्धि पाने कि कामना करता है एस यज्ञ का अधिकारी है। इसलिए सार्वभौमिक के अतिरिक्त भी मूर्धाभिसक्त राजा अश्वमेघ कर सकता था। राजा दशरथ और युधिष्ठिर ने अश्वमेघ किया था। द्वितीय शताब्दी ई. पू में पुष्यमित्र शुंग ने दो बार अश्वमेघ किया था जिसके पुरोहित पंतजलि थे।

गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने अश्वमेघ यज्ञ किया था जिसकी जानकारी उसकी मुद्राओ से मिलती है। दक्षिण के सातवाहनों, चालुक्यों और यादव नरेशों ने भी यह परम्परा जारी रखी। इस परम्परा के अंतिम शासक सवाई जयसिंह थे जिनकी जानकारी श्री कृष्ण भट्ट के कविकलानिधि के ईश्वर विलास महाकाव्य में मिलती है।

प्राचीन भारतीय समाज मे घोड़े की महत्ता इस बात से पता चलती है कि उस समय घोड़े पर एक ग्रंथ अश्वशास्त्र लिखा गया, जिसके रचयिता पाँच पांडवों से एक नकुल को माना गया है । महाभारत के विराट पर्व से नकुल के अश्व प्रेम की व्यापक झलक देखने को मिलती है। विराटनगर में जहां विभिन्न पांडव अज्ञातवास के समय अपना रूप बदल कर रह रहे थे, ऐसे में नकुल घोड़ों की देख रेख में लगे हुए थे। संभवत: वहीं उन्हें घोड़ों के इस विज्ञान की व्यापक जानकारी प्राप्त हुई होगी। घोड़ों के प्रति इतनी व्यापक जानकारी एवं सहज प्रेम के कारण ही शायद परवर्ती संस्कृत रचनाकारों ने अश्व शास्त्र का लेखक नकुल को माना है, परंतु अश्व शास्त्र में नकुल द्वारा शालिहोत्र, सुश्रुत, गर्ग इत्यादि ऋषियों को अश्व शास्त्र का ज्ञाता बताया गया है। शालिहोत्र तो अश्व शास्त्र के प्रथम ज्ञाता बताए गए है। उनका नाम महाभारत में विभिन्न स्थानों पर उल्लेखित है। एक स्थान पर उनको घोड़े जैसी मेधा वाला बताया गया है। भगवान श्री कृष्ण एवं पांच पाण्डव अश्व शास्त्र के प्रकांड विद्वान थे। नकुल इसीलिए अश्व शास्त्र के रचयिता माने जाते है और ऐसा श्रुति परम्परा में विख्यात है कि इस ग्रन्थ की रचना में शालिहोत्र ऋषि द्वारा व्यापक सहायता प्रदान की गई थी। इसलिए शालिहोत्र के बाद पारंपरिक रूप से नकुल अश्व शास्त्र के ज्ञाता माने जाते है। यही कारण था कि महाभारत के युद्ध में वह पांडवो के सेना का व्यापक नियंत्रण कर रहे थे। नकुल के अनुसार घोड़े धर्म और अर्थ को अर्जित करने में सहायक होते है। मनुष्य घोड़े के माध्यम से ही भूमि व सम्पदा अर्जित करता है। घोड़े यश, कीर्ति एवं विजय के संवाहक होते है। उस स्थान पर सब प्रकार के शुभ संकेत सहज विराजमान होते है जहां अच्छी नस्ल के घोड़े पाए जाते है। नकुल कहते है कि यदि किसी के प्रांगण में एक दिवस पर्यन्त यदि घोड़े का प्रवास हो जाए तो वह व्यक्ति समुद्र पर्यत भूमि पर विजय कर सकता है और यदि किसी के पास सिर्फ घोड़ों की ही सेना हो तो उस व्यक्ति के निवास में साक्षात लक्ष्मी नारायण को छोड़ कर आ जाती है।

हमने देखा कि प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप मे घोड़े आर्थिक और

सामरिक क्षेत्र मे एक अतिमहत्वपूर्ण पशु था। परिवहन के साधनों के अभाव मे घोड़े एक महत्वपूर्ण परिवहन के साधन थे, ये किसी भी जलवायु मे जल्दी ढल जाते थे और कई दिनों तक भूख प्यास सहन कर लेते थे। युद्ध और लड़ाई मे सैनिक इनकी सहायता से दुश्मनों पर तेजी से आक्रमण कर युद्ध के परिणाम अपनी ओर मोड लेते थे। जिसके पास जीतने घोड़े, उसकी सेना उतनी ही शक्तिशाली मानी जाती थी। प्राचीन काल मे चतुर्वाहिनी सेना मे एक सेना घुड़सेना होती थी। इसके अलावा तत्कालीन समय मे संदेशवाहक भी घोड़ों का उपयोग करते थे। इन सभी कारणों से घोडा समाज मे अतिमहत्वपूर्ण पशु बन गया जिसके कारण समाज मे घोडा पूजनीय बन गया। उसे कई देवताओं से जोड़ा जाने लगा, कहीं-कहीं देवताओं के समतुल्य मान कर पूजा जाने लगा। वैदिक धर्म के अलावा घोड़े जैन और बौद्ध धर्म मे बराबर महत्व रखते है। यह जाहिर सी बात है कि समाज मे जिस पशु का आर्थिक, सामरिक या अन्य कोई उपयोग हो तो वह धर्म के क्षेत्र मे भी महत्वपूर्ण हो जाता है और ऐसा हमे घोड़े के रूप मे देखने को मिलता है। हमने ऊपर देखा कि घोड़ों पर काफी साहित्य लिखा गया है। उन्हे कहीं महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथों यथा वेदों, ब्राह्मणों, उपनिषदों, महाभारत, रामायण आदि मे तथा इसके अलावा अनेक कथाओं और किवंदितियों मे भी इन्हे शामिल किया गया है। चूंकि घोड़े तत्कालीन समाज मे एक मूल्यवान निधि माने जाते थे, इसीलिए उन्हे स्वस्थ और सेहतमंद रखने के लिए उन पर काफी शोध किया गया, जिसका परिणाम घोड़ों पर लिखे गए अनेक वैज्ञानिक ग्रंथों मे देखने को मिलता है जैसे कि नकुल विरचित अश्वशास्त्र, कल्हण रचित शालिहोत्रसमुच्चय, जयदत्ता सूरी विरचित अश्ववैद्यक आदि।

अत: प्राचीन भारतीय साहित्य में उल्लेखित उपर्युक्त उदाहरणों से यह बात तो भली भांति परिचित हो गई है कि भारतीय मनीषी गण न सिर्फ मानवों बल्कि जीवो के प्रति भी सजग थे। सजगता का उत्कृष्ट उदाहरण और क्या ही होगा कि घोड़े की मानसिक स्थिति एवं उसके गुणों पर भी व्यापक एवं गंभीर रूप से प्रकाश डाला गया है। 'वसुधैव कुटुंबकम' की पंक्ति को भारतीय साहित्य के विभिन्न ग्रन्थ चरितार्थ करते हुए दिखाई पड़ते है। महाभारत काल से लेकर सोमेश्वर तक व उसके बाद के विभिन्न लेखकों द्वारा घोड़ों एवं उनके विभिन्न पक्षों पर डाला गया प्रकाश भारतीय ज्ञान कोश की व्यापकता का एक सुन्दर एवं सजीव उदाहरण है। परंतु आज के तकनीकी दौर मे मनुष्यों ने अनेक परिवहन के साधनों का आविष्कार कर लिया है जिन्होंने ने घोड़ों और अन्य पशुओं को प्रतिस्थापित कर दिया है। यहीं दृश्य हमे घोड़ों के मनोरंजन के साधन और सामरिक महत्व मे भी दिखाई पड़ते है तकनीक और विज्ञान ने इन दोनों क्षेत्रों मे इनके प्रतिस्थापन खोज लिए है परंतु आज भी घोड़ों का उतना ही धार्मिक महत्व है जितना प्राचीन समय मे था। अश्वों से संबंधित अनेक परामपराएं और रीतियाँ आज भी भारतीय समाज मे प्रचलित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. नगर, महेंद्रसिंह: भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में युग युगीन अश्व, जोधपुर: राजस्थान ग्रंथागार(2013)
2. पट्टनायक, देवदत्त: पशु. दिल्ली: राजपाल एंड संस(2015)
3. श्रीवास्तव, कृष्ण चंद्र: प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, इलाहाबाद: यूनाइटेड बुक डिपो(2018)
4. शर्मा, कृष्णगोपाल - जैन, हुकम चंद - शर्मा, मुरारीलाल: भारत का इतिहास, जयपुर: अजमेरा बुक कंपनी(2016)
5. थापर, रोमिला: भारत का इतिहास, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन (2018)
6. शर्मा, कालुराम - व्यास, प्रकाश: भारतीय संस्कृति के मूल आधार, जयपुर: पंचशील प्रकाशन(2012)

****